राजेश शर्मा

जन्मस्थान- भिण्ड मध्य प्रदेश
शिक्षा- एम.ए. अर्थशास्त्र
प्रकाशन- गीत पुस्तक "हल्दी आखत गीत के, डॉ श्रीकांत उपाध्याय (पुणे)द्वारा गीतों की समीक्षा पुस्तक राजेश शर्मा का गीत वैभव प्रकाशित
सम्मान- गीत चांदनी जयपुर द्वारा गीत रत्न सम्मान सहित अनेक सम्मान
सम्प्रति- बैंक ऑफ इंडिया से सेवा निवृत्त।

धड़कनों के बीच कस्तूरी लिए

धड़कनों के बीच कस्तूरी लिए ,
प्रश्न ये है गंध को कैसे जियें?
अब किसी आनंद को कैसे जियें?

ज़िन्दगी ने सीख लीं भरना कुलांचें,
मन नहीं करता कि अब इतिहास बाँचें.
घुंघरुओं में बांधकर चारों दिशाएँ,
हम बिना सुर-ताल के निर्बाध नाचें.

जब अकेले ही विचरने हृदय हो,
झुण्ड के अनुबंध को कैसे जियें?
अब किसी आनंद को कैसे जियें?

एक भटके लक्ष्य पर,सौ-सौ शिकारी,
हर शिकारी की हवाओं पर सवारी.
जब नहीं हो पेड़-पौधा शेष कोई,
तब बचेगी ज़िन्दगी कैसे हमारी.

फूल ओढ़े आवरण पर आवरण हैं ,
प्रस्फुटित मकरंद को कैसे जियें?
अब किसी आनंद को कैसे जियें?

हम नहीं हैं सिर्फ, इकलौते अभागे,
जो बहारों के शिखर से कूद भागे.
और भी हैं , बंधुवर, मेरे तुम्हारे ,
जो रहे हैं दौड़ में हरबार आगे.

रास्ते पहुँचे कसैली खाइयों में ,
चिर-रसीले छंद को कैसे जियें?
अब किसी आनंद को कैसे जियें?

नदिया क्या करे

फिर लहर तट छू गई इस बार
नदिया क्या करे
सामने थी प्यास की मनुहार
नदिया क्या करे

हिम शिखर के बाद छूटी हिम नदी जैसी सहेली
देवदारों में उछलती
कूदती फिरती अकेली
एक हिरनी ले गई आकार
नदिया क्या करे

उलझनों ने भी सिखाया,खीझकर राहें बदलना
था कठिन कलुषित वनों के
बीच से बचकर निकलना
पाहनों ने रोक ली थी धार
नदिया क्या करे

याद है वो पेड़,जिसने बाढ़ में,तन-मन छुआ
तब लगा ऐसा दहकती
आग ने मधुवन छुआ
स्वप्न तो होते नहीं साकार
नदिया क्या करे

बाँध ने बंदी बनाया, कस लिया तटबंध ने
सीस से तल में उतारा
सिन्धु की सौगंध ने
रस प्रिया को रेत का आधार
नदिया क्या करे

ISSN:2583-8849